International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(2): 75-78

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(2): 75-78
© 2015 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 24-11-2014
Accepted: 29-12-2014

Damodar Shastri
Student, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar, India

Corresponding Author:
Damodar Shastri
Student, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar, India

''महाकाव्य के लक्षण की दृष्टि से वामनावतरण महाकाव्य में काव्यतत्त्व का समीक्षण''

Damodar Shastri

प्रस्तावना

साहित्यशास्त्र में महाकाव्य की प्रधानता प्रदर्शित की गई हैं काव्य के दो प्रकार है। एक श्रव्य काव्य और दूसरा दृश्य काव्य जैसा कि विश्वनाथ ने कहा है–

''दृश्यश्रव्यंत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्''
दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तुरूपकम्।। (सा द. 6–1)

श्रव्यकाव्य की श्रेणी में रघुवंश आदिमहाकाव्य का नाम उल्लेखनीय है। दृश्यकाव्य के क्षेत्र में रूपकों की गणना की जाती है। इन दोनों ही काव्य विधाओं में श्रव्यकाव्य का स्थान प्रथम है। दूसरा स्थान दृश्य काव्य का है। दोनों ही प्रकार के काव्य के लिए कतिपय नियम प्रदर्शित किये गये हैं। काव्य के निर्माण में कवि को स्वातन्त्र्य प्राप्त नहीं है। उन्हीं नियमों की दृष्टि से यहाँ पर विचार किया जा रहा है। शोध की दृष्टि से यह आवश्यक है कि मिश्र महोदय द्वारा प्रणीत काव्य का मूल्यांकन काव्य के लिए निर्देशित नियमों के आलोक में ही किया जाए। महाकवि विश्वनाथ ने या और कवियों ने अपने अपने लक्षण ग्रन्थ में महाकाव्य का कुछ लक्षण निर्देशित किया है। उन लक्षणों में कुछ नियम भी बतलाये गये हैं। उन्हीं नियमों के आधार पर हम वामनचरित का काव्यत्व सिद्ध करने जा रहे हैं। सर्वप्रथम विश्वनाथ की दृष्टि से काव्यलक्षण का स्वरूप निरूपित करेंगे, पश्चात् अन्य कवियों के द्वारा प्रदत्त लक्षण पर भी विचार करेंगे। जैसे–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैकोनायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।
शृंङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।।
(सा.द. 6 परि.)

महाकवि दण्डि ने भी अपने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण इस प्रकार से किया है। जैसे–

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम्।
आशीर्नमस्क्रियावस्तु निर्देशो वापि तन्मुखम्।। (काव्यादर्श–1–14)

इस प्रकार सर्गबन्ध शब्द से महाकाव्य का ही ग्रहण होता है। महाकाव्य की रचना सर्गाधारित होती है। काव्य का प्रारम्भ आर्शीवादात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा नमस्क्रियात्मक मंगल से होता है। प्रायः सभी काव्य, महाकाव्य में से ऐसे दृश्य समुपस्थित होते हैं। प्रकृत महाकाव्य वामनावतरण भी इसी प्रकार का महाकाव्य है। इस महाकाव्य का एक नायक भगवान् वामन है और वह कश्यप वंश में समुत्पन्न है। भगवान् वामन कश्चप का सन्तान है। और वह वामन पृथिवी के भार का अपसारण करने के लिए आये हैं। प्रह्लाद का पुत्र विरोचन, विरोचन का पुत्र बलि, अतीव बलवान् था। बलि के द्वारा पीड़ित देवता स्वर्ग को छोड़कर जहाँ तहाँ निवास बनाकर रहने लगा था। कालक्रम से सभी देवता डरकर इन्द्र को साथ लेकर ब्रह्म के पास गये और अपनी व्यथा सुनाई। ब्रह्मा से प्रेरणा लेकर देवता लोग विष्णु के पास गये और प्रार्थना की कि सभी देवताओं को बलि पीड़ित कर रहा है, सता रहा है। ऐसी स्थिति में आप ही शरण है। पश्चात् विष्णु से आश्वत होकर देवता लोग लौट आये। श्रीमद् भागवत में बलि

वामन का चरित्र उदात्त रूप में वर्णित है। पौराणिक कथा के अनुसार कभी बलि सभी देवताओं को जीतकर स्वर्ग पर भी शासन करने लगा था। इसलिए देवताओं की व्यथा से पीड़ित भगवान विष्णु भगवान विष्णु बलि के गर्व का अपहरण करने के लिए कश्यप के यहाँ पुत्र रूप में जन्म लिया। क्योंकि भगवान् जगत् के कल्याण के लिए ही अवतार ग्रहण करते हैं। इन्द्र का ऐश्वर्य रखते हैं और देवताओं की रक्षा करते हैं। जैसे कि कालिदास ने भी कहा है।

भवतु तव विडौजाःज प्राज्यवृष्टिः प्रजासु।
त्वमपि वितत् यज्ञो वज्रिणं प्रीणयालम्।।
युगशतपरिवर्तेरेवमन्योन्य कृत्यैर्
भवतुमुभयलोकानुग्रहश्लाधनीयौः (अभि.शा. 7–14)

भारतीय संस्कृति मूलरूप से समग्रसंस्कृति का उदाहरण है। क्योंकि भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन हेतु न जाने कितने अवतार हुए हैं और उन अवतारपरम्पराओं को लेकर अधिकाधिक काव्य की निर्मित हुई है। महाभारत एवं पुराणों में वर्णित आख्यानों एवं सदुपदेशों के माध्यम से भारतीय संस्कृति आज भी हजारों वर्षों से संरक्षित दिखाई पड़ती है। आज भी भारतीय आख्यान व सदुपदेश प्रासंगिक है और भारतीय संस्कृति के संवर्धन में अपना योगदान कर रहा है। विशेषकर पुराणों में उदात्त चरित का वर्णन ही समुपलब्ध होता है। जिनको आधार बनाकर कवियों ने आज तक काव्य व महाकाव्य का निर्माण किया है और कर रहे हैं।
श्रीमदभागवतपुराण में बलि–वामन सन्दर्भ का वर्णन बड़ा ही रोचक है और दोनों ही सन्दर्भ उदात्त है। वे सन्दर्भ आज के स्वार्थ विहीन व मूल्यहीन तथा भारतीयलोकतन्त्र की शिक्षा के लिए पथ प्रदर्शक हैं। बलिनिग्रह की चर्चा भागवत में विस्तार के साथ की गई है। इस आख्यान का क्या रहस्य है, क्या तात्पर्य है, उसको समझने के लिए पर्याप्त धैर्य की आवश्यकता है। कारण यह है कि इस कथानक का लोकोत्तर वैशिष्ट्य है। आपाततः प्रतीत होता है कि बलि का निग्रह भगवान् वामन ने स्वार्थ सिद्धि के लिए किया है। महान तपस्वी शुक्राचार्य भी वैसा ही मानते हैं। किन्तु वैसी स्थिति नहीं है। भगवान विष्णु गर्वापहारी है। दुष्टों के गर्व का अपहरण करना और सज्जनों को मान प्रदान करना ही उनका शाश्वत धर्म है। दुष्टों के गर्वापहरण एवं सज्जनों के संरक्षण के लिए ही भगवान अवतार ग्रहण करते हैं। ''अवतरति अनेन इति अवतारः'' करण में घञ् प्रत्यय हुआ है। अवतार शब्द का अर्थ है देह। इसी रीति से भगवान् विष्णु ने अवतार के द्वारा भक्त त्राण को उद्देश्य बनाकर बलि का बन्धन किया और गर्व का अपहरण किया। इसमें बलि का हित भी सन्निहित है। बलि के गर्व का अपहरण कर भगवान् ने उसका कल्याण किया उसको सुतललोक का राजा बनाया साथ ही आगे चलकर इन्द्र बनने का आशीर्वाद प्रदान किया। वैष्णवकुलोत्पन्न बलि प्रारम्भ से बलोद्धत था। भृगुवंश की संस्कृति को प्राप्त कर देव संस्कृति का नाश किया तथा भोगवादी संस्कृति की स्थापना की। दानवों की संस्कृति भोगवादी थी। बलि की दानवीय संस्कृति अभ्युदयदायीनी नहीं थी। इसके द्वारा जगत् का कल्याण नहीं हो सकता था। इसलिए भगवान् वामन ने त्रिपदाधरित्री की कामना कर उसके गर्व का नाश किया और अहंकार का खण्डन किया। इतना सब कुछ होने पर भी भगवान् वामन ने बलि के ऊपर विद्यमान वात्सल्य दृष्टि का परित्याग नहीं किया। वात्सल्य की दृष्टि से ही बलि की रक्षा की और उसका पालन भी किया न कि छद्म दृष्टि से। इससे स्पष्ट है कि भगवान् वामन ने गर्वभंजन ही बलि का किया न कि ऐश्वर्य भंजन। इस प्रकार वामन ने बलि की पारमार्थिक समुन्नति की कामना करता हुआ उसके लिए सभीकार से मंगल कामना की और उसकी रक्षा की थी। इस प्रकार से जब हम शोध की दृष्टि से विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि भगवान् वामन का अवतरण जगत् कल्याण के लिए हुआ है। जिसके माध्यम से बलि का उद्धार हुआ। यह बलि के उद्धार के लिए और जगत् के मंगल के साथ–साथ देवताओं के सदुपदेश के लिए भी था। इन्द्र के लिए भी सदुपदेश था इन्द्र को भगवान् ने कहा कि तुम्हें भी त्याग की भावना से काम करना चाहिए। मद रहित होकर काम करना चाहिए। नम्रतापूर्वक कार्य करना चाहिए। नही तो तुम्हारी भी गति इसी प्रकार की होगी। विनयार्जव केवल देवताओं के लिए ही काम्य नहीं है अपितु राक्षसों के लिए भी काम्य है। अविनयी राजा निश्चय ही विनाश को प्राप्त करता है। यही है भगवान् वामन के अवतरण का रहस्य। इसी अभिप्राय को भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में अभिव्यक्त किया है–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। (गीता)

इन उपर्युक्त तथ्यों का परिपालन भगवान् वॉमन ने स्वयं ही निष्कपट भाव से किया है। इसमें कहीं भी संशय नहीं है। परमकारूणिक भगवान् सभी प्रकार से भक्तों की रक्षा करते हैं पालन करते हैं और सदुपदेशप्रदान कर उर्ध्वगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जैसा कि भगवान् ने स्वयं गीता में कहा है–
''न मे द्वेष्योऽस्ति कश्चन''। सभी प्रकार के स्थावर जंगमात्मक जगत् के कर्त्ता करूणावरूणालय भगवान् वामन विश्वात्मा मित्र बनकर उपदेश देते हैं कि ऐसा करने से तुम्हारा कल्याण होगा। नही तो तुम्हारा गर्व निश्चय ही नष्ट हो जायेगा। क्योंकि विष्णुसहस्त्रनाम में भगवान् का एक नाम ''मानद'' भी है। मानद शब्द का अर्थ है शत्रुओं के मान का दमन करना और मित्रों को मान प्रदान करना। ''मानं ददाति'' इति मानदः। मानं द्युतिखण्डयति इति मानदः। अर्थात् शत्रुओं के मान का खण्डन करने वाला तथा मित्रों को मान प्रदान करने वाला। इस प्रकार भगवान् विश्वात्मा वामन की करूणा प्राणि मात्र के प्रति है। सबों का हितचिन्तन उनका कर्त्तव्य है। इसीलिए बलिबन्धन में भी उनकी करूणा ही परिलक्षित होती है। समस्त लोगों का आधार वामन भगवान् कश्यप के कुल में जन्म लेकर सबों को सन्तुष्ट किया और जगत् का कल्याण किया। जैसा कि अधोलिखित पद्यों से स्पष्ट है–

मुहूर्तेऽभिजिन्नाम्नि मध्यन्दिनेऽसौ
स्फुरद्द्वादशीये तिथौ पुण्यकाले।
सितेभाद्रमासे सुनक्षत्र तारा–
घटीदण्डचक्रग्रहे सानुकूले।।
असूत प्रभुं देवमाताऽदितिस्तं
शिशुं दिव्यरूपं हरिं पुष्कराक्षम्।
स्वमायावशीभूतमाद्यन्त हीनं
जगत्साक्षीमात्रं परं निर्विकारम्।।
हरेर्जन्म विज्ञाय रम्भाधृताच्यु–
र्वशीमेनकामिश्रकेश्योऽम्बरस्थाः।
अदित्याश्रमे मोदसंन्दोहमग्नाः
कलं नर्तनं सन्दधुश्चित्र मुद्राः।। (अ. 6/8–9–10)

प्रकृत महाकाव्य का नायक कतिपय समालोचकों के अनुसार इन्द्र हैं। वह काव्य के नायक का प्रागुण्य धारण करता है। नायक का लक्षण साहित्य दर्पण में इस प्रकार है–

त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजो वैदग्ध्यशीलवान्नेता।। (सा.द. 3/10)

जो लोग प्रकृत महाकाव्य में इन्द्र को नायक मानते हैं उनके अनुसार इन्द्र सर्व गुण सम्पन्न हैं। किन्तु वामन को ही नेता मानना सभी दृष्टिकोण से समीचीन जान पड़ता है। कारण यह है कि विरोचन पुत्र बलि के कल्याण के लिए और देवताओं के मंगल के

लिए भगवान् वामन ने पृथिवी पर अवतार ग्रहण किया है। नायक का प्रथम गुण होता है। त्यागी होना, भगवान् वामन भी त्याग पुरःसर ही सभी कार्य का सम्पादन करते हैं। दूसरा गुण है उनका कृतज्ञ होना वो कृतज्ञ भी हैं संसार कल्याण के लिए अवतार लेकर अपने तेज से असुरों को पराजित करके देवताओं की रक्षा करते हैं। बलिप्रायोजित विश्वजित् यज्ञ में बलि से त्रिपदाधरित्री की याचना करके बलि का निग्रह करते हैं और बलि को अपनी मर्यादा में रहने का उपदेश देते हैं। काव्य के नायक भगवान् वामन में प्रायः न्यायोचित सभी गुण विद्यमान है। जिनको प्राप्तकर के सभी लोग आँसू बहाते हैं और वामन के द्वारा किये गये कार्य पर पुष्पवृष्टि प्रदान करते हैं। उत्साह सम्पन्न वामन देवताओं एवं असुरों के कल्याण के लिए ही अवतार ग्रहण करते हैं। वास्तविक रूप से विचार करने पर नायक के चार भेद परिलक्षित होते हैं। जिनमें धीरोदात्त, धीरोद्वत, धीरललित व धीर प्रशान्त परिगणित है। जैसा कि अधोलिखित पद्य से स्पष्ट है।

धीरोदात्तो धीरोद्धतस्तथा धीरललितश्च।
धीरेप्रशान्तइत्ययमुक्तः प्रथमश्चतुर्भेदः।। (सा.द. 3–31)

वामनवतरण का नायक वामन सर्वथा सर्वागुणसम्पन्न धीरोदात्त नायक है। कवि विश्वनाथ ने धीरोदात नायक के गुणों का वर्णन इस प्रकार से किया है। जैसे–

अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महसत्त्वः।
स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढ़व्रतः कथितः।। (सा.द. 3–32)

महाकाव्य का नायक वामन कभी भी आत्मश्लाघा नहीं करते। निरन्तर जगन्मंगल के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वे सर्वथा क्षमाशील, गर्वापहारी एवं करूणामय है। उनका गाम्भीर्य प्रशंसनीय है। वे देवताओं के संरक्षक है। कर्मबन्धन से उनका कोई तात्पर्य नहीं है फिर भी ऋत् के पालन के लिए और जगन्नमंगल के लिए संसार में आकर माता की कुक्षि में गर्भधारण करते हैं बाल लीला धारण करते हैं यह उनका स्वभाव है। जैसा कि अधोलिखित पद्य से स्पष्ट है–

नियन्ता त्रिलोक्याः स्वयं चिन्मयो यः
परब्रह्मनामाऽक्षयो निर्विकारः।
कथं कर्म बन्धावसक्तो भवेत् सः
स्फुरल्लीलयैवास्ति जातस्तथापि।। (वा.अ. – 17)

कवि ने स्वयं ही अपने महाकाव्य के नेता के विषय में कहा है–

नेता चात्र शचिपतिर्दिविषदां धुर्यो महिम्ना हरेः
धीरोदात्तगुणस्त्रिलोकधुरियो भूयः प्रतिष्ठापितः
सम्राज्याधिगमार्थसिद्धिमहितं काव्यस्य रम्यं फलं
शान्तोऽगींरस आसुरीं प्रशमयन् वार्तामृतध्वंसिनीम्।। (वा.अ. 7/60)

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णनाओं से ज्ञात होता है कि प्रकृतकाव्य का नायक इन्द्र है, इसी का नायकत्व युक्ति संगत है किन्तु इस प्रकार के निर्णय से हम सहमत नहीं है क्योंकि नायकोचित सभी गुण इन्द्र में विद्यमान नहीं है, जैसा कि मैंने पहले ही आवेदित किया है। नायक का सभी गुण रामयुधिष्ठिरादि की तरह भगवान् वामन में ही हैं प्रतिनायक के रूप में बलि को संगृहीत किया जा सकता है। इस काव्य का शान्त रस अंगी है। अंगी रस के रूप में उसकी ही सत्ता स्वीकार्य है। पुरुषार्थ सिद्धि के लिए साम्राज्यं की प्राप्ति ही फल प्रतीत होता है। आसुरी प्रवृतियां का ध्वंस ही शान्तरस का उपजीव्य है। काव्य के किसी एक रस को अंगीरस बनाना चाहिए इस दृष्टि से शान्त रस प्रधान ही वामन चरित को मानना चाहिए। आचार्य विश्वनाथ का भी यही कथन है कि एक ही रस को अंगी बनाना चाहिए। इस नियम के अनुसार इस वामनावतरण महाकाव्य में बहुत से रस अंग के रूप में आये हैं तो अंगी के रूप में शान्तरस का ही पर्यवसान हुआ है। क्योंकि महाकाव्य के अन्तिम सर्ग में बलि को निग्रह कर इन्द्र के राज्य की पुनः स्थापना तथा देवताओं के वर के अनुरूप ऋत् की स्थापना ही काव्य का मुख्य लक्ष्य बतलाया गया है। इसीलिए यह महाकाव्य रस प्रधान हो गया है। भगवान कृष्णद्वैपायन द्वारा प्रणीत भागवत पुराण ही इस महाव्य का उपजीव्य है। उसी के आधार पर इस महाकाव्य की रचना की गइ हैं इस काव्य का वैशिष्ट्य है कि कवि सर्वप्रथम अपने काव्य में अपने वंश का परिचय प्रस्तुत करता है। साथ ही प्राचीन कवियों के गुणों का वर्णन भी करता हैं कवि का आदर्श कालिदास हैं पद पद पर कालिदास की चर्चा कवि करता है। यद्यपि कवि वेदादिकों की भी प्रस्तुति व गान करता है तथापि मुख्यरूप से वेदों के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा धारण करता है। कवि की श्रद्धा वाल्मीकि के प्रति भी है। फिर भी कवि का व्यामोह कविता कामिनी का आदर्शभूत कवि कालिदास से है। कविवर राजेन्द्र मिश्र ने महाकवि कालिदास की स्तुति करते हुए कहा है कि–

कविकुलगुरुकल्पं कालिदासं समीडे
कृत जलधरदूतं गीतवशं रघूणाम्।
तदनु च भवभूतिं भारविं बाणहर्षौ
समधिकविनयेंन प्रार्थये भट्टिमाघौ।। (वा.अ. 1–7)

साहित्यशास्त्रोक्त लक्षण के अनुसार प्रत्येक सर्ग में एक ही वृत्त का अनुसरण कवि को करना चाहिए। पश्चात् सर्गान्त में अन्य छन्दों का भी निवेश करना चाहिए। इन्हीं नियमों को ध्यान में रखकर प्रकृत महाकाव्य वामनावतरण में सर्गान्त पद्य एक ही छन्द में निरूपित है। सर्ग के अन्त में अन्य वृत्त का भी आश्रय लिया गया हैं यह काव्य 17 सर्गों में विभक्त है। सर्ग निरूपण के प्रसंग में न्यूनतम 25 से अधिक पद्य प्रति सर्ग में उल्लिखित है। इस वर्णन के द्वारा ''नाति स्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह'' यह विश्नाथोक्त वचन सर्वथा इस महाकाव्य में चरितार्थ दिखाई पड़ता है। काव्यलक्षण के सन्दर्भ में कवि विश्वनाथ कहता है कि महाकाव्य में सन्ध्या–सूर्य–चन्द्र–रात्रि–प्रदोष–वन–समुद्र–संयोग–वियोग–मुनि–नगर–यज्ञ–संग्राम–विवाहादि का वर्णन परमावश्यक है। इन नियमों के अनुसार भी इस काव्य में (वामनावतरण) में कवि ने इन सभी नियमों का पालन दृढ़तापूर्वक किया है। वामनावतरण के तृतीय सर्ग में नद–नदी कानन–शैशव–यौवन वर्णनों से सम्पृक्त नन्दनवन का वर्णन करता हुआ कवि पुष्करणी का भी वर्णन करता है। कहीं पर दिवसनायक सूर्य का वर्णन करता है तो कहीं पर उद्यान एवं पुरुष की शोभा का भी वर्णन प्रस्तुत करता है। कहीं पर मृदुकोलाहलपूरित वेणुवन का भी वर्णन करता है। जैसा कि अधोलिखित वर्णन से स्पष्ट है–

बकुलैः सुभकोरकाञ्चितैः फललुब्धारूणनेत्रसेवितैः।
फलपातसमुत्थवल्लकीमृदुनादीभ्रमदक्षनिः स्वनैः।।
जलचारिविहंगमव्रजैः शिशुभेकैश्चगृहांगणीकृतम्।
नलिनीतटमैक्षत क्वचिच्चटुवार्तारहतंसमण्डलम्।।
दिवसेऽपिदिंनाधिनायकं कलिकोत्तुंशिखाप्रभाभरैः।
स समर्चयदात्मगर्वितं दुनुजेन्द्रो नु ददर्श चम्पकम्।।
(वा.अ. 3/15–17)

इस महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में दनुजराज बलि के प्रताप का वर्णन विद्यमान हैं साथ ही ब्रह्मचारी देवेन्द्र संवाद भी वर्णित है। शुक्राचार्य के द्वारा अनुशासित बल सभी प्रकार से अनुशासन को प्राप्त होकर ही सुतल लोक का राजा बना और इन्द्रपंद प्राप्त का आशीर्वाद भी ग्रहण किया।

पंचम सर्ग में पुत्र के पराजय को जानकर अदिति को परिताप हुआ और अपने पति के पास जाकर पति शुक्राचार्य से पूछा पति देव मेरे सुपुत्र अभी निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कोई उपाय बतलावें। मेरे ऊपर दया करें जिससे मेरे पुनः पुत्र अपने राज्य को प्राप्त कर सुख से जीवन व्यतीत कर सके। साथ ही यशर एवं प्रतिष्ठा को भी प्राप्त कर सके। पत्नी की बात को सुनकर कश्चप ने अदिति को उपदेश दिया कि धैर्य धारण करो तुम तो स्वयं ही श्रुति के मर्म को जानने वाली हैं जगत् के मर्म को भी जानती हो। समय बड़ा बलवान् होता है। समय की प्रतीक्षा करो। ये पाञ्च भौतिक शरीर बन्धन के कारण होते हैं। इस विषय में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। शोक का परित्याग कर भगवान् की आराधना करो वे सभी मनोकामनाओं को पूरा करेंगे। भगवान् विष्णु जगत् की पीड़ा को हरने वाले है। उनका नाम 'जनार्तिहर' है। भगवान् की ही उपासना से सब कष्ट दूर होते हैं। अदिति ने ऐसा ही किया और भगवान् की उपासना करके भगवान् वामन को पुत्र रूप में प्राप्त किया। तदनुंसार भगवान् वामन ने अपनी माता अदिति को अभयदान देकर उनके पुत्रों की रक्षा की और पुनः स्वर्ग का पालन प्रदान किया। इस निर्भय होकर स्वर्ग पर शासन करने लगा। बलि को भी सामर्थ्य के के अनुरूप सुतल लोक का राजा बनाकर अभय कर दिया। इस प्रकार सर्वभूतान्तरात्मा वामन ने दोनों को न्यायोचित मार्ग का अनुसरण करने का आदेश देकर माता–पिता का भी पुत्र रूप में अनुरंजन किया। भूभाग का अपसारण कर लोक परलोक में शान्ति स्थापित की। प्रजा में भी सुख–शान्त फैल गई। सभी लोग मर्यादा का पालन करने लगे। भगवान् वामन का कार्य सम्पन्न हो गया। इधर भगवान् वामन विष्णु रूप में प्रकट होकर अपना विशाल स्वरूप दिखलाया और माता–पिताप को प्रणाम कर अपने धाम को चले गए।

संदर्भ सूची

1. भागवत पुराण, महर्षि वेदव्यास, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. विष्णुपुराण, आचार्य श्री रामानुज शर्मा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
3. अभिनव रस मीमांसा (संस्कृत), डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी
4. किरातार्जुनीयम, डॉ. सच्चु मिश्रा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
5. कुमारसंभवम्, मल्लिनाथ कृत, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
6. 17वीं सदी के संस्कृत महाकाव्य, डॉ. रामलखन पाण्डे, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
7. नैषध समीक्षा, डॉ. देवनारायण झा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
8. अलंकार सर्वस्व, रामचन्द्र द्विवेदी, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
9. काव्यप्रकाश, डा. ज्योत्सना मोहन, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
10. भर्तृहरिशतकम, गोपीनाथ, बहियसंस्कृत संस्थान, दिल्ली